टमाटर में एकीकृत रोग प्रबंधन

पौधशाला के रोग

पौधशाला में लगने वाले बिमारियों में आर्द्रगलन टमाटर का सबसे प्रमुख रोग है। यद्यपि बीज गलन, जीवाणु अंगमारी और सूत्रकृमि का संक्रमण पौधशाला में लगने वाले अन्य रोग हैं। पौधशाला में मृदा एवं बीज जनित कवक, अंकुर तथा प्राकुंर की नरम अवस्था में नष्ट कर देते हैं। नर्सरी में पौध कम होने का मुख्य कारण अंकुरण पूर्व आर्द्रगलन एवं बीज का सड़ना होता है। इस तरह का आर्द्रगलन से छुपा हुआ नुकसान होता है परन्तु अंकुरण के पश्चात् का आर्द्रगलन एक गम्भीर समस्या है। पौध में संक्रमण अंकुरण के बाद जमीन की सतह पर होता है जिससे तार जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। उत्तकों के मुलायम, गीले तथा कमजोर होने के कारण पौध ऊपर से गिर जाते हैं और बाद में मर जाते हैं। यह पूरी प्रक्रिया बहुत ही जल्द होती है। आर्द्रगलन भूमि कवक के विभिन्न प्रजातियाँ जैसे राइजोक्टोनिया, पिथियम, फ्यूजेरियम, स्केलेरोशियम, फोमा और अल्टरनेरिया से होता है। टमाटर के पौध की दूसरी महत्वपूर्ण बीमारी जीवाणु पत्ती धब्बा रोग है। इसका लक्षण पौधे के ऊपरी भाग पर बहुत छोटे, भूरे धब्बे के रूप में दिखाई देता है। पत्तियाँ पीली पड़ने लगती हैं तथा नीचे गिर जाती हैं। भारी मृदा, अधिक वर्षा, अधिक मृदा में नमी, सघन रोपाई, कम प्रकाश और नत्रजन की अधिक मात्रा पौधशाला की बीमारी को बढ़ावा देते हैं।

अल्टरनेरिया झुलसा

इसमें पत्तियों के किनारे के भाग पर गोलाकार से लेकर अनियमित भूरे धब्बे दिखाई देते हैं। इन धब्बों के बाहरी किनारे पीलापन लिए हुए होते हैं जोकि रोग कारक द्वारा विष उत्पन्न होने के कारण होता है। अगेती झुलसा के लक्षण जमीन के ऊपर पौधों के सभी भाग पर दिखाई देते हैं। पौधों की क्यारी में अंकुरण पूर्व और पश्चात आर्द्रगलन भी आता है जिससे पौधे के तने का एक तरफ का भाग भूरा तार जैसा हो जाता है। रोग सामान्यतः तने के एक तरफ होते हैं जो फैलकर सिकुड़ जाता है। आर्द्र मौसम में धब्बे बढ़े हुए दिखाई देते हैं। सर्वप्रथम संक्रमण कलियों पर आता है। फल पर लक्षण डंठल से प्रारम्भ होता है। फल पर धब्बे गहरे, भूरे, दबे हुए, अस्पष्ट एवं लगातार घेरे के रूप में दिखाई देते हैं।

पिछेती झुलसा

उत्तर पश्चिम राज्यों में यह रोग अधिक सामान्य है। रोग सर्वप्रथम पत्तियों के अग्र भाग से प्रारम्भ होता है। झुलसी पत्तियों पर प्रायः हल्के भीगे मृत उत्तक दिखते हैं। रोगकारक तेजी से बढ़ते रहते हैं जब तक कि पूरी पत्ती मर नहीं जाती है। झुलसा से प्रभावित कच्चे व पके फलों का उत्तक हरे एवं भूरे रन्ध्र गद्देदार हो जाते हैं, जिसको काटने पर गंध आती है। यह रोग जाड़े के दिनों में वर्षा होने पर बहुत तेजी से फैलता है।

कॉलर राट

इस रोग का प्रथम लक्षण जमीन से सटे पौधे के मुख्य तने के छाल का क्षय होना है। संक्रमित भाग पर सफेद रुई जैसा कवक जाल की वृद्धि स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। बाद में उसी भाग पर सफेद हल्के व भूरे सरसों जैसे स्केलेरोसिया दिखाई पड़ते हैं। धीरे–धीरे पौधा पीला पड़कर पूरा सूख जाता है।